class - 9th

1. कहानी का प्लॉट — 1.

गोधूलि: गद्य भाग

(i) शिवपूजन सहाय का जन्म कहाँ हुआ था?
=> उनवाँस

(ii) इनमें से कौन सी पुस्तक शिवपूजन सहाय की लिखी हुई नहीं है?
=> धरती परिकथा।

(iii) 'मुंडमाल' कहानी के लेखक कौन हैं?
=> शिवपूजन सहाय।

(iv) इनमें कौन - सी पत्रिका शिवपूजन सहाय द्वारा संपादित है — बालक।

(v) भगजोगनी का दूसरा पति कौन बना?
=> भगजोगनी का ही सौतेला बेटा।

(vi) "कहानी लेखक को स्वभावतः कला मर्मज्ञ होना चाहिए और मैं साधारण कलाविद् भी नहीं हूँ।" — यह कथन किसका है? => लेखक का।

(vii) 'करीमा खालिकबारी' के लेखक कौन हैं?
=> अमीर खुसरो।

(viii) दारोगा जी की दाढ़ी क्या थी?
=> बारूद की पुड़िया।

(ix) "थानेदार की कमाई और फूस का तापना दोनों बराबर है" — यह कथन किनका है? => लोगों का।

(x) => कुछ लोगों के अनुसार गरीब घर की लड़की कैसी होती है —
=> चटोर और कंजूस।

Scanned with CamScanner

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

(i) 'कहानी का प्लॉट' शीर्षक पाठ गद्य की कहानी विधा के अंतर्गत आता है।

(ii) 'कहानी का प्लॉट' पाठ के लेखक शिवपूजन सहाय हैं।

(iii) इस युग में अबला ही प्रबला हो रही है।

(iv) तिलक दहेज के जमाने में लड़की पैदा करना मूर्खता है।

(v) मृगनयनी का सौंदर्य उसके वर्तमान नवयुवक पति का स्थिति ~~[illegible]~~ धन बना हुआ है।

(vi) मुंशीजी ने ~~व~~ घोड़ी बेचकर दारोगजी का श्राद्ध किया।

(vii) दारोगजी के जमाने में मुंशीजी ने खूब घी के दीए जलाए।

1. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि कहानी लिखने योग्य प्रतिभा भी मुझमें नहीं है जब कि यह कहानी श्रेष्ठ कहानियों में एक है।

=> जिस समय कहानी का प्लॉट कहानी लिखी गई थी। उस समय अलंकृत भाषा में कहानी लिखने का दौर था। और

लेखक कहानी में वास्तविकता की अपनी, प्रभावशाली भाषा में कहानी लिखते थे। इस कथा में लेखक वास्तविकता और यथार्थ को बिना सजाए सवाँरे भाषा में अभिव्यक्त करना चाहा है। इसलिए वह विनम्रता पूर्ण शील के साथ बड़े ही आग्रह से ऐसा कहता है की कहानी लिखने योग्य प्रतिभा मुझमें बिलकुल नहीं है। मानो ही कलात्मक कहानियों और कहानीकारों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी बन जाता है। अतः यह बिलकुल सही है। यह कहानी श्रेष्ठ कहानियों में एक है।

2. लेखक ने भगजोगनी नाम ही क्यों रखा?

=> कहानी में यह नाम लेखक द्वारा दिया गया एक काल्पनिक नाम है। लेखक को कथा की नायिका को यह नाम देने का कारण इसलिए बन जाता है कि भगजोगनी ग्रामीण भोजपुरी अंचल में एक उपेक्षित गरिब तबके के लड़कियों में आती है। सबसे बड़ी बात यह है की भगजोगनी मुंसी जी की गरीबी

में पैदा हुई थी। जिसका पालन अभाव, उपेक्षा और तिरस्कार के बीच हो रहा था। जिसके कारण यही नाम स्वाभाविक था। दूसरा कारण यह है की भगजोगनी अभाव, उपेक्षा और गरिबी के बीच भी अतयंत बहुत सुंदर थी। यही कारण था की भगजोगनी जुगनी के लाल की तरह गरिबी उपेक्षा और तिरस्कार के बीच भी अपनी सुंदरता के कारण लोगों का दिल जित लेती थी।

3. दारोगाजी की तरक्की होने की क्या वजह थी?

=> दारोगाजी की तरक्की होने की वजह उनकी घोड़ी थी। लेखक ने घोड़ी को अपने शब्दों में बारूद की पुड़िया बतायी है। क्यों कि वह घोड़ी बड़े-बड़े तुर्कि घोड़ों का भी नाक काट देती थी। इस घोड़ी को देखकर बड़े-बड़े अंग्रेज अफसर भी इस घोड़ी के लिए

अपनी इच्छा व्यक्त करते थे लेकिन मुंशीजी ने अफसरों को इतना नाराज कर दिया था कि मुंशीजी काबिल, मेहनती, चालाक, दिलेर और मुस्तैद होने के बावजूद भी तरक्की नहीं कर सके। दारोगा के दारोगा ही रह गए।

4. मुंशीजी अपने बड़े भाई से कैसे उऋण हुए?

=> मुंशीजी अपने बड़े भाई से उनकी मौत के बाद एक और अफसर से हाथ मोटी रकम में घोड़ी को बेच कर उनसे उऋण हुए। अर्थात उसी पैसे से उन्होंने अपने बड़े भाई का स धूम-धाम से ~~श्राद~~ श्राद किया।

5. 'थानेदार की कमाई और फूस का तापना दोनों बराबर है।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

=> लेखक ने ऐसा इसलिए कहा कि अक्सर थानेदार की कमाई गलत तरीके से होती है। जिसके कारण कोई भी थानेदार गैर

जिम्मेदारी के साथ अपनी आँख मौन में खर्च कर देता है। लेखक ने फूस की तापने से इसलिए तुलना किया है। की जाड़े के दिनों में फूस की आग देर तक नहीं टिक सकती। जिसके कारण फूस का तापना उपयुक्त नहीं होता। धारधा जी की कमाई भी ऐसी ही थी।

6. मेरी लेखनी में इतना जोर नहीं है- लेखक ऐसा क्यों कहता है?

=> लेखक ऐसा इसलिए कहना चाहता है कि मगजांगनी की एक तरफ अनोखी गुराई और दूसरी तरफ उसकी दर्दनाक गरिबी जो कलेजा कपाँ देनी वाली है। उसको देखकर लेखक को ऐसा लगता है। कि उसकी वास्तविकता का ठिक-ठिक से अपनी भाषा में व्याख्या नहीं कर सकता। यही कारण है। की लेखक ने सच हि कहा की मेरी लेखनी में इतना जोर

नहीं है।

7. मुंशीजी गल - फांसी लगाकर क्यों मरना चाहते थे?

⇒ मुंशीजी गल - फांसी लगाकर इसलिए मरना चाहते है थे। भगजोगनी मुंशीजी की गरीबी और अभाव में विच पैदा हुई थी। उसकी स्यानी सयानी होने तक भूख और लचारी के कारण इतना घबड़ा गए थे। थी उनकी यही इच्छा होती थी। की मैं गल - फांसी लगाकर कुएं तलाब में डूब मर जाऊं भगजोगनी अपनी भूखा शांति के लिए दिन भर घर - घर घुमा करती थी। परन्तु कुछ नही मिलता तो शाम को घर लौटती और धिमी स्वर में मुझसे कहती बाबुजी कुछ खाने को दो बड़ी भूख लगी है। तो उस समय में उसकी बेबसी पर मरमाहट हो जाता और सोचता की मुझे किसी तरह मर जाना ही अच्छा होता।

8. मगजांगनी का दूसरा वर्तमान नवयुवक पति उसका ही सौतेला बेटा है। यह घटना समाज की किस बुराई की ओर संकेत करती है और क्यों?

=> यह घटना समाज की उस बुराई कि ओर संकेत करती है जो रूढ़ियों और कुप्रथाओं को गले लगाती है। यह घटना उस समाज के लिए एक करारा तमाचा है जो पारिवारिक संबंधों में नैतिकता और मर्यादाओं का खंडन करती है इतना ही नहीं। यह घटना तिलक दहेज की कुप्रथा बेमेल विवाह कि दुर्घटना के साथ समाज के नैतिक पाखण्डों का पर्दाफास करती है।

Scanned with CamScanner

(i) राजेंद्र प्रसाद का जन्म कब हुआ?
=> 3 दिसंबर 1884 ई.।
(ii) राजेंद्र प्रसाद के पिता का नाम है–
=> महादेव सहाय।
(iii) राजेंद्र प्रसाद कलकत्ता में वकील दल में कब शामिल हुए?
=> 1911 ई.।
(iv) 'बिहार टाइम्स' के सम्पादक थे–
=> महेश नारायण।
(v) राजेंद्र प्रसाद ने महेश नारायण और सच्चिदानंद सिन्हा के साथ मिलकर स्थापना की–
=> बिहार स्टूडेंट्स कांफ्रेंस।
(vi) मगध की प्राचीन राजधानी तैयार कहाँ थी? => राजगृह।
(vii) बुद्ध के समय नालंदा गाँव में आम्रवन था?
=> प्रावारिकों का।
(viii) जैन ग्रंथों के अनुसार नालंदा में महावीर की भेंट किनसे हुई थी?
=> मंखलिपुत्त गोसाल।
(ix) किस चीनी यात्री ने नालंदा में सारिपुत्र के जन्म और परिनिर्वाण स्थान पर निर्मित स्तूप के दर्शन किए?

Scanned with CamScanner

=> फाहियान ।

(x) ह्वेनसांग कब भारत आए?

=> सातवीं सदी में।

(xi) इनमें से कौन से आचार्य ह्वेनसांग के समकालीन नहीं थे?

=> नागार्जुन ।

(xii) नालंदा के किस आचार्य ने सबसे पहले 749 ई० में तिब्बत में बौद्ध विहार की स्थापना की थी?

=> शांतिरक्षित ।

(xiii) इनमें कौन सा संधि - विच्छेद गलत है?

=> शयनं न मन ।

(xiv) 'विद्यापीठ' में कौन सा समास है?

=> तत्पुरुष ।

(xv) इनमें से कौन सा विपरीतार्थक शब्द गलत है?

=> प्राचीन - नया

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

(I) डॉ राजेंद्र प्रसाद ______ भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।

(II) नालंदा ______ के इतिहास की गौरव - गाथा को समेटे हुए है

(iii) नालंदा ______ प्रदेश में है।
(iv) नालंदा का जन्म ______ के उदार दान से हुआ था।
(v) साहित्य और धर्म के अतिरिक्त नालंदा ______ का भी केंद्र था।

1. "नालंदा की वाणी एशिया महाद्वीप में पर्वत और समुद्रों के उस पार तक फैल गई थी" इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

=> प्रस्तुत वाक्य का आशय स्पष्ट करते हुए लेखक ने बताया है कि नालंदा प्राचीन काल में ज्ञान और शिक्षा का एक विशाल केन्द्र था। यह भी स्पष्ट होता है कि विद्या का इतना बड़ा केन्द्र भारत से बाहर सम्पूर्ण एशिया में दूसरा कहीं नहीं था। यही कारण है कि नालंदा की प्रसिद्धि पर्वतों और समुद्रों के पार अन्य द्वीपों और समुद्र देशों तक फैल गई थी। दूसरे देशों के भी विद्यार्थी यहां शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इतना ही

नगरी नालंदा बौद्ध दर्शन और धर्म का ऐसा केन्द्र था जहाँ से शिक्षा और उद्देश्य लेकर एशिया के विभिन्न देशों में लोग जाते और उसका प्रचार करते थे।

2. मगध की प्राचीन राजधानी का नाम क्या था और वह कहाँ अवस्थित थी। तथा बुद्ध के समय नालंदा में क्या था?

=> पैमार मगध की प्राचीन राजधानी का नाम था, जो पाँच पर्वतों के बिच गिरिव्रज अथवा राजगृह नामक स्थान पर अवस्थित थी। महात्मा बुद्ध के समय नालंदा एक गाँव था। जहाँ प्रावारिकों का एक आम्रवन था।

3. महावीर महावीर और मंखलिपुत्र गोसाल की भेंट किस उपग्राम में हुई थी। तथा महावीर ने नालंदा में कितने दिनों का वर्षावास

Page No.:

किया था?

=> महावीर और मंखलीपुत्र गोशाल की भेंट नालंदा में हुई थी। महावीर जैन धर्म के महान तिर्थंकर थे। उस समय राजगृह का उपग्राम या बाहिरीक स्थान नालंदा था। महावीर ने राजगृह की उपग्राम में 14 वर्षावास बिताया था।

4. तारानाथ कौन थे? उन्होंने नालंदा को किसकी जन्मभूमि बताया है?

=> तारानाथ तिब्बत के अपने समय में प्रसिद्ध विद्वान और इतिहासकार थे। उन्होंने नालंदा को सारिपुत की जन्मभूमि बताया है। वे एक प्रसिद्ध बौद्ध साधक और दार्शनिक थे।

5. एक जीवंत विद्यापीठ के रूप में नालंदा कब विकसित हुआ?

=> एक जीवंत विद्यापीठ के रूप में नालंदा गुप्त काल में विकसित हुआ था। अशोक के समय में भी वहां चैत्य और मंदिर बने

थे लेकिन यह गुप्तकाल में ही विद्यापीठ के रूप में विकसित हुआ था।

6. फाह्यान कौन थे? वे नालंदा कब आए थे?

=> वे एक प्रसिद्ध चीनी यात्री थे। जो शिक्षा और ज्ञान के लिए चौथी सदी में नालंदा आए थे। यहाँ आकर उन्होंने सारिपुत्र के जन्म और निर्वाण स्थल पर जाकर बौद्ध धर्म के दर्शन किये थे।

7. हर्षवर्धन के समय में कौन चीनी यात्री भारत आया था। और उस समय नालंदा की दशा क्या थी।

=> चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्षवर्धन के समय भारत आया था जिस समय नालंदा उन्नति के शिखर पर था।

Scanned with CamScanner

Page No.

18. नालंदा के नामकरण के बारे में किस चीनी यात्री ने किस ग्रंथ के आधार पर क्या बताया है।

=> प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने एक जातक कथा के आधार पर बताया था कि नालंदा का यह नाम इसलिए पड़ा था कि पूर्वजन्म में भगवान बुद्ध को यहाँ भिक्षा नहीं होती थी। इसलिए इस नाम कि पुष्टि करते हुए उन्होंने बताया कि न- अलं- दा अर्थात नहीं अलं अर्थात भिक्षा संतोष और दा अर्थात देनेवाला इसका अर्थ यह हुआ जो भिक्षा न दे सके।

19. नालंदा विश्वविद्यालय का जन्म कैसे हुआ?

=> नालंदा विश्वविद्यालय का जन्म जनता के द्वारा दान से हुआ था। सबसे पहले पाँच सौ व्यापारियों ने अपने धन से जमीन खरीदकर बुद्ध को दान में दि थी। और बाद में जनता ने भी दान देना शुरू किया जिससे इस विद्यालय का निर्माण हुआ।

10. इत्सिंग कौन था? उसने नालंदा के बारे में क्या बताया?

=> इत्सिंग एक चीनी यात्री था जिसने नालंदा के विषय में बताया था कि वहाँ के बौद्ध विहार में आठ मण्डप थे तथा तीन सौ बड़े कमरे पुरातत्व कि खुदाई में इसका सही पता चला है। इत्सिंग ने यह भी बताया है की आर्थिक दृष्टि से आचार्य और विद्यार्थी निश्चिंत थे। और खर्च के लिए। भूमि और दान के साथ-साथ दैनिक खर्च के लिए। गाँव के भी सुरक्षित कर दिया गया था। उस समय गाँवों की संख्या दो सौ हो गई थी।

11. नालंदा में किन पाँच विषयों कि शिक्षा अनिवार्य थी। तथा वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानों की सुची बनाइए।

=> नालंदा में निम्नलिखित पांच विद्यां की शिक्षा अनिवार्य थी। जैसे- व्याकरण तर्क शास्त्र चिकित्सा शास्त्र, शिल्प विद्या, धर्म तथा दर्शन यहा के प्रसिद्ध विद्वानों की सूचि इस प्रकार है — अचार्य शीलभद्र, अचार्य धर्मपाल, ज्ञानचंद्र, प्रभामित्र, स्थिरमति, गुणमति दंगदि सिंह, शांतिरक्षित अचार्य कमलशील आदि।

12. शीलभद्र से युवानच्वांग (ह्वेनसांग) की क्या बातचीत हुई?

=> जिस समय युवानच्वांग नालंदा से जाने लगे तब शीलभद्र ने उनसे नालंदा में ही रह जाने का निवेदन किया परन्तु युवानच्वांग ने उतर दिया यह देश बुद्ध की जन्म भूमि है। इससे प्रेम न होना असंभव है। लेकिन यहाँ आने का मेरा यही उद्देश्य था। की अपने भाईयो के कल्याण के लिए, मैं भगवान के महान धर्म की खोज कर सकू। अब मैं यही चाहता हूं। की मैंने जो कुछ पढा सुना है। वह दूसरो

Page No.:

के कल्याण के लिए बताऊ जिससे और लोग भी मेरी तरह कृतज्ञता हासिल कर सकें। शीलभद्र ने इस उत्तर पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की। और यह भी कहा की मैं तुम्हारी सदाशयों का हृदय से अभिनंदन करता हूँ।

13. ज्ञानदान की विशेषता क्या है?

=> ज्ञानदान की विशेषता यह है की यह सिमा रहित और अनन्त है। इससे न तो बाँटने वालों की तृप्ती होती है। और न उसे लेने वालो कि।

3- ग्राम - गीत का मर्म

(i) लक्ष्मीनारायण सुधांशु का जन्म कहाँ हुआ था?
=> चंदवा - रूपसपुर ।

(ii) इनमें से कौन सी रचना लक्ष्मीनारायण सुधांशु की है?
=> वियोग ।

(iii) लक्ष्मीनारायण सुधांशु ने किस पत्रिका का संपादन किया?
=> अवंतिका ।

(iv) 'काव्य में अभिव्यंजनावाद' है—
=> आलोचनात्मक ग्रंथ ।

(v) जीवन का आरंभ जैसे शैशव है, वैसे ही कला गीत का आरंभ है।
=> ग्राम - गीत ।

(vi) जन्म, मुंडन आदि के अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं उनमें किस भाव की प्रधानता होती है?
=> उल्लास और उमंग ।

(vii) जीवन में कौन - सी दशा सबसे अधिक शापकत्व - विधायिनी होती है?
=> प्रेम दशा ।

(viii) इनमें से कौन - सा पद संज्ञा नहीं है?
=> दरिद्र ।

(ix) 'उपलक्ष्य' में 'उप' क्या है?
=> ~~प्रत्यय~~ । उपसर्ग ।

Scanned with CamScanner

(x) शुद्धता में 'ता' क्या है?
=> प्रत्यय।

(xi) 'ग्राम - गीत का मर्म' पाठ के लेखक कौन है -
=> लक्ष्मीनारायण सुधांशु।
(xii) 'ग्राम - गीत का मर्म' गद्य की विधा है क्या है?
=> निबंध।
(xiii) ग्राम गीतों में हमारी सभ्यता और किन - किन चीजों के चित्र पाते हैं
=> संस्कृति।
(xiv) किसी देश के काव्य का उद्भव साधारणतः वहाँ की दंत कथाओं या किससे होता है?
=> ग्राम - गीतों।

(xv) सब मिलाकर ग्राम गीतों की प्रकृति क्या हो रही है।?
=> स्त्रैण।
(xvi) कला गीत के अन्तर्गत किसका समावेश है।?
=> प्रबंध
(xvii) किस गीत में दशरथ, राम, कौशल्या, सीता, लक्ष्मण, कृष्ण और यशोदा

के नाम बहुत आएँ है?

=> ग्राम - गीतों।

(xviii) कौन आदि कवि ने विरह विहवल राम के मुख से सीता कि खोज के लिए जाने कितने पशु, पंछी, लता द्रुम आदि से पता पुछवाया है?

=> वाल्मीकि।

(xviii) ग्राम गीत हृदय की वाणी है। मस्तिष्क कि क्या नहीं है?

=> ध्वनि।

(xix)

1. ग्राम गीत का मर्म निबंध में प्रवत सुधांशु जी के विचारों को सार रूप में प्रस्तुत करें।

=> महान समालोचक एव साहित्यकार लक्ष्मी नारायण सुधांशु जी के निबंध ग्राम - गीत का मर्म में गीत महत्व को प्रस्तुत किया गया है। किसी भी समाज या समुदाय के कविता से उसकी सभ्यता और संस्कृति के विकास कि अनंतरंग परमाणित झलक पाई जा सकती है। इसमें मनुष्य की मौलिक

भावनाओं, प्रेम, घृणा, लालसा, वासना, हर्ष तथा विषाद की अकृत्रिम अभिव्यक्ति पाई जाती है। इसमें स्वतः फूटने वाला सहज जातियं कवित्व होता है। जिसकी रचना मनुष्य के कर्म और कृषि के ताल पर होती है। इस गीत में जीवन की समस्याओं की समाधान के साथ मनोरंजन भी होता है।

२. जीवन का आरंभ जैसे शैशव है, वैसे ही कला गीत का ग्राम - गीत है। लेखक के इस कथन का क्या आशय है?

=> लेखक के कथन का आशय यही है कि ग्राम - गीतों से ही कला गीतों का विकास हुआ है। जिस प्रकार जीवन के प्रारंभ में हर व्यक्ति की शिशु अवस्था होती है और आगे चलकर उसका शरीर धीरे - धीरे.

पुष्ट और परिपक्व होने लगता है। इसी तरह से ग्राम गीत भी भितर बाहर से विकसित और परिपक्व होते हुए। कला गीतों में परिणत होने लगता है।

3. गार्हस्थ कर्म - विधान में स्त्रियाँ किस तरह के गीत गाती है?

=> गृहस्ती के कर्म विधान में स्त्रियाँ जिस तरह के गीत गाती हैं। उसका वर्णन सुधांशु जी ने बड़े ही मरुण मर्म स्पर्शी ढंग से किया है। चक्की पिसती हुई। धान कुटती हुई या चारखा चलाते समय अपने श्रम को दुर करने के लिए, अपनी थकान को मिटाने के वास्ते स्त्रियाँ गीत गाती हैं। जन्म, मुंडन, जनेऊ, विवाह पर्व, त्योहार, के समय ऐसे अवसरों पर अपने आप की उमंग में मनोरंजन गीत गाती है। जिसे हम संस्कार गीत कहते है।

Page No.: Jio

4. मानव जीवन में ग्राम गीतों का क्या महत्व है?

=> मानव जीवन में ग्राम गीतों का काफी महत्व है। क्योंकि इसमें मनुष्य के प्राथमिक भाव की सहज अभिव्यक्ति होती है। इतना ही नहीं जिवन की समस्याओं की समाधान के साथ - साथ मनोरंजन के लिए भी इसका काफी महत्व होता है।

5. "ग्राम - गीत हृदय की वाणी है, मस्तिष्क की ध्वनि नहीं" - आशय स्पष्ट करें।

=> इस आशय के अन्तर्गत लेखक यही बताना चाहते हैं की ग्राम गीतों में सरल भावपूर्ण मानव हृदय की सहज अभिव्यक्ति होती है। इसमें बौद्धिकता के लिए कोई स्थान नहीं होता क्योंकि जब बौद्धिकता का समावेश होता है। तो ग्राम गीत

Scanned with CamScanner

अपनी सरलता और भावमयता समाप्त कर देती है।

6. ग्राम - गीत की प्रकृति क्या है?
=> ग्राम - गीतों की प्रकृति इसी सुलभ कोमलता और माधुर्य में है क्यों कि ग्राम गीतों की प्रकृति की यही निहित गुण है। हम यह भी जानते है की इसकी के कर्मों के विधान स्त्रियों की प्रकृति ही हो रही है। यही कारण है की ग्राम - गीत स्त्रियां की विविध कर्मों के अवसर पर गाए जाते है। जन्म विवाह के संस्कार गीत पर्व त्योहारों के गीत अथवा जीवन एवं संबंधों को लेकर रचित गीत सभी स्त्रियों से जुड़े हुए रहते है।

7. कला - गीत और ग्राम गीत में क्या अंतर है?
=> कला - गीत और ग्राम गीत में अंतर बताते हुए। लेखक ने यही समझाया है की कला गीतों

का विकास ग्राम गीतों से हुआ है। लेकिन ग्राम गीत हवा पानी की तरह सरल होते हैं। जिवन कि शुद्धता और भावों की सरलता कि मार्मिक झलक ग्राम गीतों में ही पाई जाती है।

8. ग्राम गीतों में प्रेम दशा की क्या स्थिति है? पठित निबंध के आधार पर उदाहरण देते हुए समझाइए।

=> लेखक ने बताया है कि ग्राम गीतों में प्रेम की भावनात्मक एवं सरल अभिव्यक्ति होती है। जिसमें प्रेम को स्वच्छन्द देखा गया है। इस गीतों में प्रेमिका अपने प्रेमी की खोज में वन के पेड़ पौधों लताओं तथा जिव जन्तुओं से उसका पता पुछती है। कला गीतों में यह जहाँ तहाँ यह देखा गया है। ग्राम गीत में पेड़ पौधे जीव

जन्तु ऐसे प्रश्नों का उत्तर देते हुए। दिखाई पड़ते है। और प्रेम की भाव निष्फल दशाओं में मनुष्य से बातचीत भी करते है।

9. 'प्रेम या विरह में समस्त प्रकृति के साथ जीवन की जो समरूपता देखी जाती है, वह क्रोध, शोक, विस्मय, जुगुप्सा आदि में नहीं - आशय स्पष्ट करें।

=> इसका आशय स्पष्ट करते हुए लेखक ने बताया है की प्रेम और विरह अपनी प्रकृति से अतयंत व्यापक भाव है। लेकिन क्रोध, शोक, विस्मय, उत्साह, जुगुप्सा ऐसा नही एक संकुचित भाव है। प्रेम और विरह की दशा मे मनुष्य पशु-पक्षि पक्षी लता-द्रुम सबसे अपने प्रिय का पता पुछ सकता है। किन्तु क्रोधित मनुष्य अपने शत्रु का पता प्रकृति से नही पुछ सकता है।

10. ग्राम - गीत के मेरुदंड क्या हैं

=> ग्राम - गीत के मेरुदंड के विषय में लेखक ने बताया है कि दशरथ, राम, कौशल्या, सीता, लक्ष्मण, कृष्ण, यशोदा आदि नाम ग्राम गीतों में लोक सम्मानित नाम है। जो जो जन समाज के बिच विविध पारावारिक संबंधों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे श्वसुर के लिए दशरथ पती के लिए राम या कृष्ण सास के लिए कौशल्या या यशोदा देवर के लिए लक्ष्मण जैसे नाम सर्वमान्य है। इसका कारण यह है कि ऐसे महाकाव्यों का संस्कार जनता के चीत पर गहरा प्रभाव डालता। यही कारण है कि एक गरिब स्त्री सोने की सुख से भी अन्न फटकती हुई दिखाई पड़ती है। और एक साधारण व्यक्ति भी राजा की तरह सम्पती शाली ही दिखाई पड़ता है। ऐसे ही गीत ग्राम गीत के मेरुदण्ड माने जाते है।

Scanned with CamScanner

4. लाल पान की बेगम

(i) फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म स्थान है–

⇒ औराही हिंगना।

(ii) फणीश्वर नाथ रेणु का निधन कब हुआ?

⇒ 11 अप्रैल, 1977।

(iii) 'मैला आँचल' का प्रकाशन वर्ष है–

⇒ 1954 ई।

(iv) इनमें से कौन सी रचना फणीश्वरनाथ रेणु की नहीं है?

⇒ माटी पानी।

(v) 'लाल पान की बेगम' कहानी में लाल पान की बेगम कौन है?

⇒ बिरजू की माँ।

(vi) 'बिरजू की माँ के आगे नाच और पीछे पगहिया न हो तब न हुआ' - यह कथन किसका है?

⇒ बिरजू की माँ।

(vii) जब बिरजू कड़ाही सिर पर औंधाकर रखता है तो उसे किस तरह की टोपी की संज्ञा देता है?

⇒ मलेटरी टोपी।

(viii) कहानी में सिरई चुनमुन किन्हें कहा गया है?

=> बिरजू - चंपिया को।

(IX) 'उड़नजहाज की तरह उड़ाओ बप्पा'- यहाँ किस सवारी को उड़नजहाज की तरह उड़ाने के लिए कहा गया है?

=> बैलगाड़ी।

(X) सुनरी किसकी बेटी है?

=> राधे की।

(XI) सुनते ही बिरजू की माँ का चेहरा उतर गया। वाक्य में आया 'की' शब्द है—

=> कारक।

(XII) उद्गम की दृष्टि से 'छोंपा - खुड़' शब्द है—

=> देशज।

1. बिरजू की माँ को लाल पान की बेगम क्यों कहा गया है?

=> बिरजू की माँ को लाल पान की बेगम की संज्ञा सबसे पहले उसकी पड़ोसिन जंगी की पतोहू ने ही दी थी। हम यह भी जानते हैं

Jio
Page No.:

की ताश के पत्तों में एक लाल पान की बेगम होती है। जो उस खेल में महत्वपूर्ण माना जाता है लेकिन बिरजू की माँ लाल पान की बेगम कई कारणों से मानी जाती है। लाल पान की बेगम बिरजू की माँ अपने बच्ची पति घर गृहस्ती का केन्द्र बिन्दु है ही साथ ही साथ अपने बच्चों और पति के दिलों पर राज करने वाली उनकी चहेती भी है। लाल पान की बेगम बिरजू की माँ इसलिए भी है। कि सभी स्त्रीया इनका मुँह जोहती रहती है। एक बार उसके पति ने बलरामपुर का नाच दिखाने के लिए सबको कहाँ था लेकिन बैलगाड़ी लेकर नही आया। तो ढिरे- ढिरे शाम और दो घड़ी रात बित जाने के बाद बिरजू की माँ गुस्से में आ गई इसी गुस्से के कारण वह लाल पान की बेगम सिद्ध होती है।

Scanned with CamScanner

प्र.2. 'लाल पान की बेगम' शीर्षक कहानी की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

=> 'लाल पान की बेगम' शीर्षक कहानी अत्यंत सार्थक एव एक सफल कहानी है। किसी भी कहानी का शीर्षक उस कहानी का मेरुदण्ड होता है क्योंकि शीर्षक की धुरी ईर्द गिर्द में कहानी परिभ्रमण करती है प्रस्तुत कहानी में लाल पान की बेगम बिरजू की माँ है। भले ही इस कहानी में जंगी की पतोहु उसे लाल पान की बेगम व्यंग्य रूप में कहती है। ऐसा लगता है की बिरजू की माँ को अपने सुख समृद्धि का अभिमान हो गया है वह अपने आप को रानी समझने लगी है। इस तरह वह सम्पूर्ण अर्थो में कहानी के अंत होते तक लाल पान की बेगम बनी हुई है। बिरजू की माँ कहानी का केन्द्रीय

चरित्र है। इसलिए भी मिरजू की माँ के चरित्र की नींव पर ही पूरी कहानी नाचती है।

3. आंचलिकता क्या है? इसे परिभाषित करें।
=> आंचलिकता के विषय में लेखक ने बताया है की कथा साहित्य में जो कथा ग्रामीण परिवेश में आंचलिकता या अंचल विशेष का स्थानिय बोध कराती है। तथा गाँव जवार की भाषा में लिखी जाती है। उसे हम आंचलिक कथा कहते है। आंचलिक साहित्य का विकाश आधुनिक साहित्य में विकसित हुआ है।

(i) रैदास का जन्म कहाँ हुआ था?
=> बनारस।

(ii) रैदास इनमें से किस बादशाह के समकालिन थे?
=> सिकंदर लोदी।

(iii) रैदास के कितने पद सीखों के पवित्र धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहब' में सम्मिलित है?
=> चालीस।

(iv) 'प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी' में रैदास अपने आराध्य से किसकी तुलना करते है?
=> चंदन की।

(v) रैदास की भक्ति किस प्रकार की है?
=> दास्य भक्ति।

(vi) रैदास के अनुसार किसमें विष और अमृत एक साथ है?
=> मलयागिरी चंदन में।

(vii) ईश्वर यदि चंद्रमा है तो रैदास क्या है?
=> चकोर।

(viii) रैदास थे :-
=> निर्गुण संत।
(ix) रैदास के प्रिय अलंकार हैं—
=> उपमा और रूपक।
(x) रैदास के पदों की भाषा क्या है?
=> ब्रजभाषा।

1. रैदास ईश्वर की कैसी भक्ति करते हैं?
=> रैदास ने ईश्वर की भक्ति की महत्ता बताते हुए दास भक्ति की श्रेष्ठता बताई है। इस भक्ति में भक्त अपने को दास तथा ईश्वर को स्वामी मानता है। इसी प्रकार की ईश्वर भक्ति रैदास जी करते हैं। इस भक्ति में सम्पूर्ण समर्पण और निष्ठा का भाव सुरक्षित रहता है।

2. कवि ने 'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' क्यों कहा है?

=> कवि ने ऐसा इसलिए कहा है की उनके हृदय के भीतर राम नाम कीर्तन का तीव्र अनुराग पैदा हो चुका है। जिसके कारण वे रात

दिन हर पल राम के नाम की प्यास भरी पुकार करते रहते हैं। इसके सिवाय राम भक्ति का कोई रूप या भक्ति अच्छा नहीं लगता है।

3. कवि ने भगवान और भक्त की तुलना किन-किन चीजों से की है?

=> कवि ने भगवान और भक्त की तुलना जिन चीजों से कि है - वे इस प्रकार है — जैसे -

चंदन और पानी
बादल और मोर
चन्द्रमा और चकोर
दीपक और बाती
मोती और धागा
सोना और सुहागा।

इसका कारण यह कि ये सभी कि चिजें बड़े गहराई के साथ एक दूसरे से जुड़ी हुई है। और एक दूसरे पर निर्भर है तात्पर्य ऐसा है कि ये दूसरे के साथ मिलकर एक नवीन

Page No.

प्रकृति की रचना करती है। यही सर्वदा भक्त और भगवान के साथ है।

4. कवि ने अपने ईश्वर को किन-किन नामों से पुकारा है। तथा कविता का केन्द्रीय भाव क्या है?

=> कवि ने अपने ईश्वर को राम, प्रभु, स्वामी जैसे नामों से पुकारा है। जिसका केन्द्रीय भाव अनन्य प्रेम एक निष्ठता और सम्पूर्ण समर्पण है। दूसरे पद में मानसिक पूजा हृदय कि सच्ची सरल भक्ति हि केन्द्रीय भाव है।

Q.7. "मलयागिरि बेधिओ भुजंगा। विष अमृत दोउ एकै संगा" - इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

=> इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए लेखक ने बताया है की चन्दन के पेड़ों में शीतलता के कारण सर्प लिपटे रहते हैं। भले ही इन विषैले सर्पों से चंदन भरा हुआ है। फिर भी चंदन अपनी पवित्रता, शीतलता और

सुगंध के कारण अमृत तुल्य बन जाता है। उसमें जहर का कोई असर नहीं होता। इसलिए कवि को पूजा के लिए चंदन भी चढ़ाने में संकोच होता है।

9. रैदास अपने स्वामी राम की पूजा में कैसी असमर्थता जाहिर करते हैं?

=) रैदास जी अपने स्वामी राम की पूजा में असमर्थता जाहिर करते हुए कहते हैं। कि भगवान निर्गुण और निराकार हैं। इसलिए उनकी पूजा में किसी कर्मकाण्ड और चढ़ावे की कोई जरूरत नहीं है। रैदास जी भगवान की पूजा में किसी चढ़ावे के नाम पर ऐसा अनुराग करते हैं। की पूजा कि हर सामग्री जूठी है। और यह सामग्री पहले ही उपयोग में आ चुकी है। इस तरह जुठी समाग्री चढ़ावे के रूप में भगवान को भेंट नहीं चढ़ाई जा सकती है।

10. कवि अपने मन को चकोर के मन की भाँति क्यों कहता है?

=> कवि ने अपने मन को चकोर की भाँति इसलिए बताया है की चकोर चंद्रमा को एक टक से देखता है। और उसकी दृष्टी चन्द्रमा कि सिवाए किसी दूसरी वस्तु पर नह अपनी दृष्टी नही डालता है। इसलिए रैदास जी भी अपने भक्ति भक्त के लिए चकोर को ही आदर्श मानते है।

11. रैदास के राम का परिचय दिजीए।

=> रैदास के राम निर्गुण और निराकार है जो कण-कण में व्याप्त है। वे ऊँच-निच पवित्र अपवित्र पूजा पाठ और कर्म काण्ड का मुल्य नही मानते वे ह्रदय की सच्ची भक्ति भावना से प्रसन्न हो जाते है। इस तरह अधम अपवित्र व्यक्ति भी अपनी उत्कट अनुराग और समर्पण से उन्हे प्राप्त कर सकते है।

2. पद्मावत

(i) इनमें से कौन सी रचना मंझन की है?
=> मधुमालती।

(ii) मंझन खाँ ने अपने गुरु का नाम क्या बताया है?
=> शेख मुहम्मद।

(iii) मंझन के अनुसार संसार में क्या अमूल्य रत्न की तरह है?
=> प्रेम।

(iv) किसे मृत्यु भी नहीं मार पाती?
=> प्रेममार्गी को।

(v) किसके लिए यह संसार उत्पन्न हुआ है?
=> प्रेम के लिए।

(vii) चारों दिशाओं में किसकी हाट फैली हुई है?
=> प्रेम की।

(viii) 'मधुमालती' का रचनाकाल है-
=> 1545 ई०।

Page No.:

1. Q:- मंझन हिन्दी के किस प्रकार के कवि थे?

Ans:- सूफी संत कवि थे।

(ii) मधुमालती छंद कैसे बनता है?

Ans:- दोहा और चौपाई मिलकर।

1) कवि ने प्रेम को संसार में अंगूठी के नगीने के समान अमूल्य माना है। इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए कवि के अनुसार प्रेम के स्वरूप का वर्णन करें।

Ans:- कवि ने प्रेम को संसार में अंगूठी के नगीने के समान अमूल्य रत्न बताया है। जैसे रत्न शोभा और समृद्धि का कारण बनता है, उसी प्रकार प्रेम जीवन को अलंकृत और समृद्ध बनाता है, और हृदय में प्रेम का आविर्भाव होने पर जीवन सार्थक और धन्य हो जाता है। इसलिए कवि शब्दों में प्रेम ही संपूर्ण सृष्टि को प्रकाशित करता है।

2. कवि ने सच्चे प्रेम की क्या कसौटी बताई है?

उत्तर: प्रेम की सच्ची कसौटी त्याग है। क्योंकि प्रेम में डूबकर प्रेम अपना सबकुछ त्याग देता है। यह भी सत्य है कि प्रेम की महिमा सच्चे जीवन की अनुभूति प्रेम में मरकर ही पायी जा सकती है।

3. प्रेम की शरण में जाने पर जीव की क्या स्थिति होती है?

उत्तर: प्रेम की शरण में जाने पर जीव का उद्धार हो जाता है, और इस नश्वर जीवन से छुटकारा पा कर अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। प्रेम के द्वारा भक्त अपना उद्धार कर लेता है, ऐसा व्यक्ति ही किसी मारे मरता नहीं स्वयं मृत्यु भी डरने लगती है।

Scanned with CamScanner

भाषा - उच्चरित ध्वनि-संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति अथवा जिसकी मदद से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते हैं, उस यादृच्छिक, रूढ़ ध्वनि-संकेत की प्रणाली को भाषा कहते हैं।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं -

(i) भाषा ध्वनि-संकेत - सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा ध्वनि-संकेत कहते हैं। जैसे - रेलगाड़ी का गार्ड हरी झंडी दिखाकर यह भाव व्यक्त करता है कि रेलगाड़ी अब खुलनेवाली है।

(ii) लिखित भाषा - जिस शब्द को लिखकर किसी को समझाने या बताने का प्रयास किया जाता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। जैसे - कुत्ता, हाथी, बिल्ली आदि।

(iii) मौखिक भाषा - जिन शब्दों को हम बोलकर किसी को समझाने का प्रयास करते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। जैसे - बच्चा, बूढ़ा, जवान आदि।

अनुनासिक (ँ) - ऐसे स्वरों का उच्चारण करते समय नाक से कम तथा मुँह से अधिक ध्वनि निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। जैसे - गाँव, दाँत, आगन आदि।

अनुस्वार (ं) - यह स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है, जिनका उच्चारण करते समय नाक से अधिक तथा मुँह से कम ध्वनि निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे - अंश, हंस, अंगूर आदि।

निरनुनासिक - ऐसा स्वर वर्ण जिनका उच्चारण केवल मुँह द्वारा निकली गई ध्वनि से होता है, उसे निरनुनासिक कहते हैं। जैसे - इधर, उधर, आप, अपना, घर इत्यादि।

वर्ण

वर्ण वह मूल ध्वनि है जिनका खंड या टुकड़ा नहीं किया जा सकता है। जैसे - अ, आ, इ, र इत्यादि।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

(i) स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण स्वतः होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं, जैसे, अ, आ, ...

स्वर वर्ण के भेद -

(i) ह्रस्व स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अति अल्प समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - अ, इ, उ, ऋ।

(ii) दीर्घ स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में ह्रस्व स्वर वर्ण की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) प्लुत स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा तीन गुना समय लगता है, उसे प्लुत स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - ओ३म। ॐ

व्यंजन वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में स्वर वर्ण की मदद ली जाती है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे - क --- ह।

व्यंजन वर्ण के भेद -

(i) स्पर्श व्यंजन - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण कंठ, तालु, मूर्द्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श करने से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे - क वर्ग से प वर्ग तक।

(ii) अंतःस्थ व्यंजन - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। अंतःस्थ व्यंजन को 'अर्द्धस्वर' भी कहा जाता है। जैसे - य, र, ल, व।

Scanned with CamScanner

(iii) ऊष्म व्यंजन – वैसे वर्ण जिनका उच्चारण हमारे शरीर के अंदर एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है, उसे ऊष्म व्यंजन कहते हैं। जैसे - श, ष, स, ह ।

वायु प्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं —

(i) अल्पप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास पहले से अल्प मात्रा में निकले तथा जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण तथा अंतःस्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन हैं।

(ii) महाप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास अधिक मात्रा में तथा हकार जैसी ध्वनि विशेष रूप से निकलती है, उसे महाप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का दूसरा एवं चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन वर्ण महाप्राण व्यंजन हैं।

नाद की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं –

(i) अघोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत नहीं होती हैं, उसे अघोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला एवं दूसरा वर्ण तथा श, ष, स ।

(ii) घोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करते में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत होती हैं, उसे घोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण, सभी स्वर वर्ण, य, र, ल, व और ह ।

विसर्ग (:) अनुस्वार की तरह प्रयोग होनेवाला यह एक व्यंजन वर्ण है तथा इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। हिन्दी में अब इसका अभाव होता जा रहा है, लेकिन तत्सम शब्दों के प्रयोग में इसका आज भी उपयोग होता है। जैसे - पयःपान, प्रातःकाल, अतः इत्यादि।

बलाघात (स्वराघात) – बोलते समय अर्थ या उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर विशेष बल देते हैं, तो इस क्रिया का बलाघात या स्वराघात कहा जाता है। जैसे - विष्णु, इन्द्र, राम, इत्यादि।

संगम – उच्चारण करते समय दो ध्वनियों के बिच जो विराम आता है, उसे संगम कहते हैं। जैसे - तुम्हारे, उत्पन्न इत्यादि ।

अनुतान – बोलने के क्रम में जो सुर में उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुतान या सुरलहर कहते हैं। जैसे - कौन करेगा तथा करेगा कौन ?

लिपि – वर्णों को लिखने के लिए जिन सांकेतिक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं। जैसे - ा, ि, ी, --

ध्वनि – भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं।

वर्तनी – वर्णों/शब्दों को ठीक ढंग से लिखने की रीति को वर्तनी कहते हैं।

अयोगवाह - वैसा वर्ण जो न तो स्वर है न व्यंजन फिर भी वह ध्वनि का वहन करता है, उसे अयोगवाह कहते हैं। जैसे - अं, अः ।

हल् - व्यंजन वर्णों के नीचे जब एक तिरछी रेखा (्) लगाई जाती है, उसे हल् कहते हैं। हल् लगाने का अर्थ है कि व्यंजन में स्वरवर्ण का बिलकुल अभाव है या व्यंजन आधा है। जैसे - क्, ख्, ---

वर्ण-विच्छेद - वर्णों को अलग करने की रीति को वर्ण-विच्छेद कहते हैं। जैसे - क = क् + अ ।

पंचमाक्षर - अनुनासिक वर्णों को ही पंचमाक्षर वर्ण कहते हैं। जैसे - ङ, ञ, ण, न, म ।

संयुक्ताक्षर - वैसा वर्ण जिसमें दो या दो से अधिक व्यंजन वर्णों का मेल होता है, उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।

उच्चारण स्थान का विवरण -

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ -	अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	- कंठ्य वर्ण
तालु -	इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्	- तालव्य वर्ण
मूर्द्धा -	ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्	- मूर्द्धन्य वर्ण
दंत -	त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्	- दंत्य वर्ण
ओष्ठ -	उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्	- ओष्ठ्य वर्ण
कंठ-तालु -	ए, ऐ	- कंठ-तालव्य वर्ण
कंठ-ओष्ठ -	ओ, औ	- कंठोष्ठ्य वर्ण
दंतोष्ठ -	व्	- दंतोष्ठ्य वर्ण
नासिका -	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	- नासिक्य वर्ण

Scanned with CamScanner

Class 9 to 10

01

छन्द

अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रागणना तथा यति-गति से सम्बद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्यरचना 'छन्द' कहलाती है। छन्दशास्त्र में ह्रस्व को लघु कहते हैं जिसका चिन्ह (।) होता है तथा दीर्घ को गुरु कहते हैं, जिसका चिन्ह (ऽ) होता है।

लघु और गुरु के नियम

i. अ, इ, उ - इन ह्रस्व स्वरों तथा इनसे युक्त एक व्यंजन या संयुक्त व्यंजन को 'लघु' कहा जाता है। जैसे - कलम - इसमें तीन लघु वर्ण हैं। इस शब्द का मात्रा चिन्ह (।।।) है।

2. चन्द्रबिंदुवाले ह्रस्व स्वर भी लघु होते हैं।

गुरु - i. आ, ई, ऊ, ऋ इत्यादि दीर्घ स्वर तथा इनसे युक्त व्यंजन गुरु होते हैं। जैसे - राजा - इस शब्द का मात्रा चिन्ह (ऽऽ) है।

ii. ए, ऐ, ओ, औ - ये संयुक्त स्वर तथा इनसे मिले व्यंजन भी गुरु होते हैं। जैसे - ऐसा, ओला, नौका इत्यादि।

iii. अनुस्वारयुक्त वर्ण गुरु होता है, जैसे संसार।

iv. विसर्गयुक्त वर्ण भी गुरु होता है। जैसे - स्वतः दुःख।

v. संयुक्त वर्ण के पूर्व का लघु वर्ण गुरु होता है। जैसे - सत्य, भक्त, दुष्ट, धर्म

संख्या - मात्राओं और वर्णों की गणना को संख्या कहते हैं।

क्रम - लघु एवं गुरु के स्थान निर्धारण को क्रम कहते हैं।

गण - मात्राओं एवं वर्णों की संख्या और क्रम की सुविधा के लिए जिन वर्णों का उपयोग किया जाता है उन्हें गण कहते हैं।

02

CLASSMATE
Date :
Page :

एकांकी -

एकांकी एक ऐसी पूर्ण नाटकीय रचना है जिसमें मानव जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक समस्या एवं एक भाव की अभिव्यक्ति होती है। एकांकी का अर्थ होता है - एक अंकवाला नाटक।

निबन्ध

निबन्ध विचारों, उद्धरणों एवं कथाओं का सम्मिश्रण है।

Scanned with CamScanner

कहानी -

आधुनिक काल में कहानी का लक्ष्य मानव-जीवन की विविध समस्याओं तथा संवेदनाओं को व्यक्त करना ही कहानी कहलाता है।

कहानी के तत्व -

(i) कथावस्तु (ii) चरित्र-चित्रण (iii) संवाद (iv) देशकाल या वातावरण (v) उद्देश्य (vi) शैली।

जीवनी -

किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन वृतांत को जीवनी कहते हैं।

आत्मकथा -

किसी प्रसिद्ध लेखक या व्यक्ति के जीवन की अभिव्यक्ति ही आत्मकथा होती है।

नाटक -

अवस्था की अनुकृति ही नाटक है।

नाटक के तत्व - वस्तु, नेता, रस।

नाटक की कथा को वस्तु कहते हैं जो दो प्रकार के होते हैं - (i) आधिकारिक कथा - यह वह कथा है, जो नाटक में आरंभ से अन्त तक पायी जाती है। (ii) प्रासंगिक कथा - प्रासंगिक कथाएँ लघु होती हैं, जो नाटकीय कथावस्तु की धारा में चलकर कुछ दूर चलकर समाप्त हो जाती हैं।

नेता - चरित्र को नेता कहते हैं। जो नायक की कथावस्तु का नेतृत्व करता है, इसे नायक कहते हैं। लेकिन 'नेता' में नाटक के सभी प्रकार के चरित्रों का समावेश होता है - नायक, नायिका, विदूषक, प्रतिनायक, लघु चरित्र इत्यादि।

रस - रस काव्य और नाटक दोनों की आत्मा है। प्राचीन दृष्टिकोण से नाटक में शृंगार रस और वीर रस की प्रधानता होती थी।

गण	वर्णक्रम	चिन्ह	उदाहरण	प्रभाव
यगण	आदि लघु, मध्य गुरु, अन्त गुरु	।ऽऽ	वहाना	शुभ ।
मगण	आदि, मध्य, अन्त गुरु	ऽऽऽ	आजादी	शुभ ।
तगण	आदि गुरु, मध्य गुरु, अन्त लघु	ऽऽ।	बाजार	अशुभ ।
रगण	आदि गुरु, मध्य लघु, अन्त गुरु	ऽ।ऽ	नीरजा	अशुभ ।
जगण	आदि लघु, मध्य गुरु, अन्त लघु	।ऽ।	प्रभाव	अशुभ ।
भगण	आदि गुरु, मध्य लघु, अन्त लघु	ऽ।।	नीरद	शुभ ।
नगण	आदि, मध्य, अंत लघु	।।।	कमल	शुभ ।
सगण	आदि लघु, मध्य लघु, अंत गुरु	।।ऽ	वसुधा	अशुभ ।

Scanned with CamScanner

वर्ग - vii, viii, ix, x

व्याकरण

(1)

संज्ञा

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान भाव, गुण, दोष, मात्रा, अनुभव आदि को संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, पुस्तक, मेला, लज्जा इत्यादि

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं-

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष या खास व्यक्ति, स्थान, नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, रामायण, हिमालय आदि

(ii) जातिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी जातिभर का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- पहाड़, गाय आदि

(iii) समूहवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी झुंड, समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, वर्ग, सभा, गुच्छा इत्यादि।

(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव्य या धातु, वस्तु की परिमाण / मात्रा का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सोना, चाँदी, घी, तेल इत्यादि

(v) भाववाचक संज्ञा - जिस संज्ञाशब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण, दोष धर्म, स्वभाव इत्यादि का बोध होता है उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- बुढ़ापा, ईमानदारी, महत्ता इत्यादि।

(2)

सर्वनाम

सर्वनाम - संज्ञाओं अथवा नामों के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, वह, तुम, आप, जो इत्यादि।

सर्वनाम के भेद -

(क) पुरुषवाचक - बोलने वाले, सुननेवाले तथा जिसके विषय में जो कुछ कहा या सुना जाये, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे मैं, हम, तुम, वह इत्यादि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद-

(i) उत्तम पुरुष - वक्ता / बोलनेवाले को उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे- मैं, हम, मैंने, मुझको इत्यादि।

(ii) मध्यम पुरुष - सुननेवाले को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे- तुम, आप, तू, तुमलोग इत्यादि।

(iii) अन्यपुरुष - जिसके विषय में कुछ कहा या सुना जाये, उसे अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे- वह, वे लोग, यह, वे, ये इत्यादि।

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति या भाव के निश्चय होने का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - यह, वह, इत्यादि।

(ग) अनिश्चय वाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव के अनिश्चय होने का बोध होता है, उसे अनिश्चय-वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- कोई, कुछ आदि।

(घ) संबंधवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी संज्ञा के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध-वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- वह कौन है, जो दरवाजे पर खड़ा है?

(ङ) निजवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से स्वयं या निज का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं यह काम स्वयं ही कर लूँगा।

(च) प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न पूछने या करने का बोध होता है, उसे प्रश्न-वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- कौन, क्या, कहाँ, क्यों इत्यादि।

विशेषण

विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे- काला, मोटा, छोटा, कमजोर इत्यादि।

विशेषण के भेद —

(i) गुणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के गुण, दोष, स्वभाव, अवस्था का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - काला, मोटा, गोल, भूखा इत्यादि।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी वस्तु की माप-तौल या परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - थोड़ा, कम इत्यादि।

(iii) संख्यावाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - तीन पुस्तकें, चार कलमें, दो आदमी इत्यादि।

(iv) सार्वनामिक विशेषण - किसी संज्ञा के पहले आनेवाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे - यह पुस्तक अच्छी है।

Scanned with CamScanner

क्रिया

क्रिया - जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे - वह पढ़ता है। मैं सोता हूँ।

क्रिया के भेद -

(i) सकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म रहता है तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम पुस्तक पढ़ता है।

(ii) अकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं रहता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम पढ़ता है।

सहायक क्रिया -

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायता करती हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। जैसे - है, था, रहे, गा रहे इत्यादि।

प्रेरणार्थक क्रिया -

जिन क्रियाओं से यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम, मोहन से काम करवाता है।

वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है तथा इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, लिंग, वचन आदि आये हैं।

वाच्य के भेद -

(i) कर्तृवाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो। जैसे - लड़का आम खाता है। मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(ii) कर्मवाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को कर्मवाच्य कहते हैं, जहाँ वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। जैसे - पुस्तक पढ़ी जाती है।

(iii) भाववाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में भाव की प्रधानता रहती है। जैसे - धूप में चला नहीं जाता।

प्रविशेषण -

विशेषण की विशेषता बतलाने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं। जैसे - राम बहुत तेज विद्यार्थी है। यहाँ 'तेज' विशेषण है और उसका भी विशेषण है 'बहुत'।

Scanned with CamScanner

लिंग

संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव की जाति (स्त्री या पुरुष) का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे - राजा, घोड़ा, लड़का, लड़का, कुत्ता - कुतिया इत्यादि।

लिंग के भेद -

(i) पुँलिंग - जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुँलिंग कहते हैं। जैसे - बालक, खटमल आदि

(ii) स्त्रीलिंग - जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे - रानी, घोड़ी, लड़की इत्यादि।

पुँलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

(क) अकारांत तत्सम शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - धन, जन, वन, जल आदि

(ख) हिन्दी के आकारांत शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - लड़का, पटाखा इत्यादि

नोट - उक्त नियम के कुछ अपवाद भी हैं।

स्त्रीलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत तत्सम शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे - दया, माया, आज्ञा, घोषणा, सूचना, ईर्ष्या, इच्छा इत्यादि। पूर्ति, नारी, गोष्ठी, मृत्यु, वस्तु, ऋतु, वायु आदि।

लिंग-निर्णय के सामान्य नियम -

(क) जिन शब्दों के अंत में त्व, ना, आ, आटा, आव, आवा, औड़ा, पन इत्यादि प्रत्यय लगते हों, वे पुँलिंग होते हैं। जैसे - महत्व, पढ़ना, शौर्य, घेरा, सन्नाटा, बुढ़ापा, फैलाव, पहनावा, पकौड़ा, मित्र, बचपन, पागलपन इत्यादि।

(ख) जिन शब्दों के अंत में आई, आवट, आस, आहट, इया, ई, त, नी, री, ली इत्यादि प्रत्यय लगते हों, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - मलाई, बनावट, मिठास, घबराहट, टिकिया, गरीबी, चाहत, चटनी, कोठरी, डफली इत्यादि।

(ग) संस्कृत (तत्सम) के अकारांत शब्द पुँलिंग तथा आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - जल, स्वर्ग, भिक्षा, शिक्षा परीक्षा इत्यादि

(घ) तद्भव (हिंदी) के लिंग प्रायः तत्सम (संस्कृत) के लिंग के अनुसार होते हैं। जैसे - आश्चर्य - अचरज, संध्या - साँझ, स्वर्ण - सोना इत्यादि

(ङ) हिन्दी की द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुँलिंग होती हैं, जैसे - लोहा, चूना, मोती, दही, घी, तेल, सोना इत्यादि।

अपवाद - चाँदी स्त्रीलिंग है।

वचन

संख्या का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। जैसे - लड़का, घोड़े आदि

वचन के भेद -

(i) एकवचन - संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, घर, कलम इत्यादि।

(ii) बहुवचन - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे - घोड़े, नदियाँ इत्यादि

वचन परिवर्तन के नियम -

(i) आकारान्त शब्दों के अंत में 'ए' लगाकर बहुवचन शब्द बनाते हैं जैसे लड़का - लड़के, घोड़ा - घोड़े इत्यादि।

(ii) व्यंजनांत मूल शब्दों के अंत में 'अ' का लोप कर उसके स्थान पर 'एँ' लगाकर बहुवचन बनता है। जैसे - नहर - नहरें, रात - रातें इत्यादि।

(iii) आकारान्त/उकारान्त/ओकारांत वाले शब्दों में अंतिम स्वर का लोप नहीं होता है, अंतिम स्वर के बाद 'एँ' लगाते हैं। जैसे - महिला - महिलाएँ, वधू - वधुएँ इत्यादि।

(iv) ईकारान्त संज्ञा शब्दों में 'ऑ' बहुवचन सूचक प्रत्यय लगाता है तो अंतिम स्वर 'ई' का ह्रस्व 'इ' हो जाता है जैसे नारी - नारियाँ, टोपी - टोपियाँ इत्यादि।

(v) समुदाय सूचक शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे - मनुष्य, जनता, भीड़, मवेशी इत्यादि।

(vi) कुछ शब्दों के एकवचन एवं बहुवचन एक समान होते हैं। जैसे क्रोध, भय, दान, स्वामी, तपस्वी इत्यादि।

(vii) लोग, दर्शन, प्राण, बाल, हस्ताक्षर, आँसू, समाचार सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे

(viii) दया, प्रेम, जल, दूध, वर्षा, हवा, आग सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(ix) कुछ शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अंत में 'गण' या 'वृन्द' लगाते हैं। जैसे कर्मचारीगण, शिक्षकगण, छात्रवृन्द इत्यादि।

पद -

जब वाक्य में शब्द के साथ विभक्ति लगी रहती है, उसे पद कहते हैं। अर्थात् विभक्ति सहित शब्द पद कहलाते हैं। जैसे, राम पुस्तक को पढ़ता है।

पद-परिचय - पद परिचय का अर्थ होता है, पदों का अन्वय, अर्थात् विश्लेषण।

वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग कर उसका स्वरूप और दूसरे पद से संबंध बताना 'पद-परिचय' कहलाता है। जैसे राम कहता है कि मैं मोहन की पुस्तक पढ़ सकता हूँ।

Scanned with CamScanner

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उनका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे - मैंने पत्र लिखा। राम ने मोहन को पीटा।

कारक के भेद —

(i) कर्त्ता कारक - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया करनेवाले का बोध होता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे - तुमने आम खाया। इसका परसर्ग 'ने' होता है।

(ii) कर्म कारक - वाक्य में क्रिया का फल जिन शब्द पर पड़ता है, उसे कर्मकारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'को' है। जैसे - मोहन ने आम खाया।

(iii) करण कारक - जो क्रिया की सिद्धि में साधन के रूप में काम आये, उसे करण कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से, द्वारा' होता है। जैसे - राम ने रावण को बाण से मारा।

(iv) सम्प्रदान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को कुछ दिये जाने या किसी के लिए कुछ करने का बोध हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे - वह मेरे लिए पानी लाता है। इसका परसर्ग के, लिए, वास्ते, के हेतु होता

(v) अपादान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से विरह, बिछुड़ना, दूरी, तुलना आदि का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे - पेड़ से पत्ते गिरते हैं। इसका परसर्ग 'से' होता है।

(vi) संबंध कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका परसर्ग अर्थात चिन्ह का, की, के होता है। जैसे - मोहन की गाय।

(vii) अधिकरण कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे - छत पर लड़का बैठा है। इसका परसर्ग में, पर होता है।

(viii) सम्बोधन कारक - जिस शब्द से किसी को पुकारने या बुलाने का भाव प्रकट होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका परसर्ग "हे, हो, अरे, ओ" होता है। जैसे है, राम यहाँ आओ।

निबंध —

(i) बिहार पहले और अब
(ii) छात्र और अनुशासन
(iii) समय की महत्ता
(iv) दहेज प्रथा
(v) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
(vi) आतंकवाद
(vii) बेकारी की समस्या
(viii) वृक्षारोपण
(ix) प्रदूषण
(x) खेल का महत्व
(xi) साम्प्रदायिकता
(xii) बढ़ती हुई महँगाई
(xiii) नारी शिक्षा
(xiv) जनसंख्या विस्फोट
(xv) आदर्श छात्र
(xvi) युवा पीढ़ी एवं नशीला पदार्थ
(xvii) स्वच्छता

नोट — विद्यार्थीगण उपरोक्त निबंध की तैयारी अपने-अपने स्तर से करेंगे।

Scanned with CamScanner

व्याकरण (1)

शब्द -

अक्षरों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। जैसे- घर, हवा, अग्नि इत्यादि।

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं -

(i) तत्सम - संस्कृत के मूल शब्द को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे - अम्बु, अग्नि, पुष्प इत्यादि

(ii) तद्भव - संस्कृत शब्दों के बदले रूप को तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे - आँसू, कपूर आदि

(iii) देशज - देशी भाषाओं के शब्द, देशज कहलाते हैं। जैसे - लोटा, डिबिया, आदि।

(iv) विदेशज - विदेशी भाषाओं के शब्द, विदेशज कहलाते हैं। जैसे - स्टेशन, इंजिनीयर इत्यादि।

रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं -

(i) रूढ़ शब्द - अपने-आप में पूर्ण शब्द जिसमें खंड नहीं होता, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे - घर, नाक, दूध आदि।

(ii) यौगिक - वैसे शब्द जिनका खंड करने पर सभी खंडों का अर्थ सार्थक होता है, उसे यौगिक शब्द कहते हैं। जैसे, हिमालय, विद्यार्थी इत्यादि।

(iii) योगरूढ़ - वैसे शब्द जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर एक विशेष अर्थ बतलाते हैं, उसे योगरूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे - पंकज, नीलकंठ, लम्बोदर इत्यादि।

रूपांतर की दृष्टि से शब्द के दो भेद होते हैं - (i) विकारी शब्द - वैसे शब्द जिनका लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के अनुसार बदलते हैं, उसे विकारी शब्द कहते हैं। जैसे - गाय, वह, हम इत्यादि।

(ii) अविकारी - वैसे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, पुरुष, कारक के अनुसार कभी बदलते हैं, उसे अविकारी शब्द कहते हैं। जैसे - धीरे-धीरे, तथा, अचानक इत्यादि।

Scanned with CamScanner

अव्यय

जिस शब्द में किसी भी कारण से कोई परिवर्तन नहीं होता है, उसे अव्यय कहते हैं। जैसे- अभी, जब, तब इत्यादि।

अव्यय के चार भेद होते हैं-

(i) क्रिया-विशेषण - क्रिया की विशेषता बताने वाले अव्यय क्रिया-विशेषण अव्यय कहलाते हैं। जैसे- धीरे-धीरे, जल्दी, और से इत्यादि।

(ii) संबंधबोधक - संज्ञा के बाद आकर उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से बतलाने वाले अव्यय संबंध बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे- बाद, निकट, अपेक्षा, पीछे इत्यादि।

(iii) समुच्चयबोधक - एक वाक्य या शब्द का संबंध दूसरे वाक्य से बतलाने वाले अव्यय या जोड़ने वाले अव्यय समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे- इसलिए, परन्तु आदि

(iv) विस्मयादिबोधक - जिन अव्ययों से हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि के भाव सूचित होते हैं, परन्तु उन का संबंध वाक्य के किसी विशेष पद से नहीं होता, उसे विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे- हाय, शाबास, वाह इत्यादि।

उपसर्ग - वैसा शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देता है, उसे उपसर्ग कहते हैं। जैसे- प्र + कार = प्रकार, अनुमान आदि

प्रत्यय - वैसा शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, उसे प्रत्यय कहते हैं। जैसे- दिन + इक = दैनिक, मम + ता = ममता आदि।

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत प्रत्यय - धातु या क्रिया के अंत में लगने वाले प्रत्यय, कृत-प्रत्यय कहलाते हैं तथा इनसे बने शब्द कृदंत कहलाते हैं। जैसे, लिख + आई = लिखाई।

(ii) तद्धित प्रत्यय - जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में जुड़ते हैं, उसे तद्धित प्रत्यय कहते हैं, इस प्रकार बने शब्द तद्धितांत कहलाते हैं। जैसे- लकड़ी + हारा = लकड़हारा, अपना + पन = अपनापन आदि।

Scanned with CamScanner

काल

क्रिया के उस रूप को काल कहते हैं, जिससे उस कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध होता है।

काल के भेद -

वर्तमान काल - जो समय अभी बीत रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे- मैं पढ़ता हूँ।

वर्तमान काल के भेद -

(i) सामान्य वर्तमान काल - क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का सामान्य रूप से सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं, जैसे- वह आती है।

(ii) तात्कालिक वर्तमान - जिससे ज्ञात होता है कि क्रिया वर्तमानकाल में हो रही है, उसे तात्कालिक वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे - वह जा रहा है।

(iii) पूर्ण वर्तमान - इससे वर्तमान में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है। जैसे - वह आया है।

(iv) संदिग्ध वर्तमान - जिससे क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में संदेह न हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। जैसे वह पढ़ता होगा।

(v) संभाव्य वर्तमान - जिससे वर्तमानकाल में क्रम के पूरा होने की संभावना रहती है, उसे संभाव्य वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे - शायद, बारिश हो।

भूतकाल - बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं। जैसे - वह गया।

भूतकाल के भेद -

(i) सामान्य भूत - जिससे भूतकाल की क्रिया के सामान्य समय का ज्ञान न हो, उसे सामान्य भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे - मोहन आया।

(ii) आसन्न भूत - इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है, उसे आसन्न भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे- मैंने खाया है।

(iii) पूर्ण भूत - क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते हैं, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय

Scanned with CamScanner

स्पष्ट होता है। उसे पूर्णभूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे - वह आया था।

(iv) अपूर्णभूत - इससे ज्ञात होता है कि क्रियाभूत काल में हो रही थी, लेकिन उसकी समाप्ति का पता नहीं चलता है। जैसे - गीता सो रही थी।

(v) संदिग्धभूत - इसमें यह संदेह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ था या नहीं। जैसे - तुमने खाया होगा।

(vi) हेतुहेतुमद्भूत - इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी, परन्तु किसी कारणवश नहीं हो सकी। जैसे - मैं आता तो वह जाता।

भविष्यत्काल - भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यत्काल कहते हैं। जैसे - वह आयेगा।

भविष्यत्काल के भेद -

(i) सामान्य भविष्य - इससे प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी। जैसे - मैं पढ़ूँगा।

(ii) संभाव्य भविष्य - जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यकाल कहते हैं। जैसे - रमेश कल आया।

(iii) हेतुहेतुमद् भविष्य - इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है। जैसे वर्षा होगी तो फसल अच्छे होंगे।

Scanned with CamScanner